खंड-3
उपखंड-2

# मध्यकालीन अर्थव्यवस्था
# ( Economy during Medieval Period)

## सल्तनतकालीन अर्थव्यवस्था

**सल्तनत कालीन अर्थव्यवस्था**

**कृषि अर्थव्यवस्था**
- सिंचाई को प्रोत्साहन
  1. रहट अथवा साकिया अथवा फारसी चक्र का प्रयोग
  2. तुगलक शासकों के काल में नहर-सिंचाई का विकास।
- अफीम, मेंहदी का उत्पादन शुरू हुआ।
- फिरोजशाह तुगलक ने 1200 बागीचे लगवाए।

**शिल्प अथवा प्रौद्योगिकी**
- धुनकी (मुहम्मद गोरी)
- चरखा- फुतुह-उस-सलातीन (इसामी)
- करघा (मिफ्ताह-उल-फुजाला)
- कागज एवं जिल्दसाजी
- आसवन विधि

**व्यापार**
- बेहतर कानून व्यवस्था
- साम्राज्य निर्माण
- मानक मुद्रा के रूप में चाँदी का टंका (इल्तुतमिश)
- सड़क एवं मार्गों का निर्माण
- उत्तर भारत का पश्चिम एशिया व मध्य एशिया से संबंध

**नगरीकरण**

तुर्की शासन की स्थापना ने आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाये तथा कृषि, दश्तकारी, वाणिज्य-व्यापार एवं नगरीकरण को प्रोत्साहन दिया।

### कृषि अर्थव्यवस्था

इस काल में कृषि, बेहतर अवस्था में थी। भारत की भूमि उपजाऊ थी। बड़ी संख्या में पशुधन उपलब्ध थे। अत: पशुओं के गोबर का उपयोग बड़े पैमाने पर खाद के रूप में होता रहा होगा। अलाउद्दीन खिलजी के काल का एक अधिकारी ठक्कर फेरू 25 प्रकार की फसलों की चर्चा करता है। इस काल में सिंचाई हेतु साकिया या रहट पद्धति की शुरुआत हुई, जो गियर प्रणाली पर आधारित थी। इसके अतिरिक्त, इस काल में कुएँ से जल निकालने की कई प्रकार की विधियाँ प्रचलित थीं। फिरोजशाह तुगलक ने नहर सिंचाई को प्रोत्साहन दिया। इसके परिणामस्वरूप दिल्ली-हरियाणा क्षेत्र में कृषि उत्पादन में प्रगति हुई तथा खरीफ के अतिरिक्त रबी फसलें भी होने लगीं।

इस काल में परंपरागत फसलों की खेती के साथ-साथ नवीन फसलों के रूप में अफीम, मेंहदी आदि का प्रचलन शुरू हुआ। सबसे बढ़कर, बागवानी फसलों को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। उदाहरण के लिए, फिरोजशाह तुगलक के द्वारा दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों में 1200 बगीचों का निर्माण कराया गया।

### शिल्प अथवा प्रौद्योगिकी

तुर्कों के साथ भारत में कुछ नवीन शिल्पों का आगमन हुआ। इन शिल्पों ने उत्पादन को प्रोत्साहन दिया। उदाहरण के लिए, मुहम्मद गोरी के काल में ही भारत में **'धुनकी'** का प्रचलन आरम्भ हो गया। इसके माध्यम से रूई को साफ करना आसान हो गया। फिर जैसा कि 14वीं शताब्दी का एक ग्रंथ **'फुतुह-उस-सलातीन'** हमें सूचित करता है कि इस काल में **'चरखा'** का प्रचलन आरंभ हो गया था, चरखे के प्रचलन के साथ सूत की कताई में छ: गुनी वृद्धि हो गयी। उसी प्रकार, **'मिफ्ताह-उल-फुजाला'** नामक ग्रंथ से करघे के उपयोग की सूचना मिलती है। इसके कारण वस्त्रों की बुनाई को प्रोत्साहन मिला। इस काल में कागज एवं जिल्दसाजी का प्रयोग भी आरंभ हुआ। कागज का प्रचलन सर्वप्रथम गुजरात में आरंभ हुआ था। तुर्की लोग अपने साथ निर्माण की एक नवीन तकनीकी लेकर आए थे। इस काल में विनिर्माण कार्य मेहराब तथा गुंबद की तकनीकी पर आधारित था। फिर इस काल में पत्थरों को जोड़ने के लिए गारे के रूप में चूने और जिप्सम का प्रयोग भी आरंभ हुआ। इसके कारण विनिर्माण कार्य को प्रोत्साहन मिला। इस काल में आसवन विधि के प्रयोग की भी सूचना मिलती है। इसके कारण बेहतर किस्म की शराब बनाया जाना संभव हुआ। फिर सल्तनत काल में ही बंगाल में मलबरी रेशम का उत्पादन आरंभ हुआ।

### वाणिज्य-व्यापार

वाणिज्य-व्यापार को प्रेरित करने वाले निम्नलिखित कारक थे-

1. एक लंबे काल के पश्चात् फिर एक बार उत्तरी भारत, पश्चिम एशिया एवं मध्य एशिया के क्षेत्र से घनिष्ठ रूप में संबद्ध हो गया।
2. सल्तनत के अंतर्गत कानून व्यवस्था की स्थिति सुदृढ़ हुई तथा राजनीतिक स्थायित्व कायम हुआ।
3. अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद-बिन-तुगलक जैसे सुल्तानों के द्वारा मार्गों के निर्माण को प्रोत्साहन दिया गया।
4. इस काल में एक लंबे काल के पश्चात् मानक मुद्रा (टंका, जीतल) का प्रचलन आरंभ हुआ।
5. इस काल में नवीन तकनीकी के आगमन के परिणामस्वरूप कुछ नवीन उत्पादन केन्द्रों का विकास हुआ।

6. इस काल में एक नए अभिजात्य वर्ग के आगमन ने विलासिता संबंधी वस्तुओं की माँग बढ़ा दी।
7. अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण व्यवस्था ने भी अनाजों की मंडी कायम की तथा प्रेरित व्यापार को प्रोत्साहन दिया।

■ **आंतरिक और बाह्य व्यापार**– सल्तनत काल में हम तीन भिन्न प्रकार की व्यापारिक संरचनाएँ देखते हैं–

**1. गाँव एवं नगर के बीच**– गाँव से अनाज एवं कच्चे माल नगर को पहुँचते थे, परंतु बदले में गाँव को कुछ नहीं मिलता था। ये सामग्रियाँ भू–राजस्व के माध्यम से नगर तक पहुँचती थीं।

**2. नगर से नगर के बीच**– नगर एवं नगर के बीच भी आंतरिक व्यापार की एक संरचना कायम थी। उदाहरण के लिए, मुल्तान, दिल्ली से चीनी मँगाता था, तो मेरठ एवं अलीगढ़ से शराब।

**3. भारत से बाहर के क्षेत्रों के साथ व्यापार**– इस काल में विदेश–व्यापार को भी प्रोत्साहन मिला। पश्चिम में भारत का संबंध पश्चिम एशिया, मध्य एशिया तथा पूर्वी अफ्रीका के क्षेत्रों से था, वहीं पूरब में भारत का संबंध चीन तथा दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों के साथ था।

■ **मुद्रा व्यवस्था**

मुद्रा के मानकीकरण का काम इल्तुतमिश ने किया। उसने चाँदी से निर्मित टंका तथा ताँबे की मुद्रा जीतल चलायी। फिर उसने ताँबे की छोटी मुद्रा के रूप में दाम व दिरहम को भी स्थापित किया। मुहम्मद–बिन–तुगलक के काल में पहली बार सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग हुआ।

## नगरीकरण

समकालीन ग्रंथों में जिन प्रमुख नगरों का विवरण मिलता है, वे हैं– दिल्ली, मुल्तान, अन्हिलवाड़ा (पाटन), खम्भात, कड़ा, लखनौती, दौलताबाद तथा लाहौर। इब्नबतूता ने, जो 1333 ई. में भारत आया था, लिखा है कि दिल्ली संपूर्ण पूर्वी इस्लामी साम्राज्य में आकार तथा जनसंख्या के मामले में सबसे बड़ा था। वस्तुतः राजनीतिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक कारकों ने सल्तनत काल में नगरीय अर्थव्यवस्था के विस्तार को विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया।

भारत में तुर्की शासक वर्ग के लोग अल्पसंख्यक थे। अतः सुरक्षा को ध्यान में रखकर कुछ खास क्षेत्रों में सैनिक शिविर स्थापित किए गए। जहाँ शासक वर्ग स्थापित थे, उनके आस–पास सैनिक शिविर स्थापित हुए। फिर शासक वर्ग की आवश्यकता के अनुकूल दूरस्थ क्षेत्रों में संसाधनों का आगमन हुआ और फिर देखते–देखते ये क्षेत्र नगर के रूप में विकसित हो गए। दूसरे, प्रशासनिक केन्द्रों का विकास भी नगर के रूप में होने लगा। इक्ता मुख्यालय में भी शासक वर्ग के लोग थे तथा इसका विकास प्रशासनिक केन्द्रों के रूप में हुआ। फिर ये भी नगर के रूप में स्थापित हो गए। तीसरे, मंगोल आक्रमण के कारण हिंदुस्तान में बड़ी संख्या में विद्वानों और साहित्यकारों का आगमन हुआ। अतः सांस्कृतिक गतिविधियों पर आधारित कुछ नगरों का विकास हुआ। फिर, सूफी संतों के दरगाह तथा खानकाह आगे नगर के रूप में विकसित होते चले गए क्योंकि श्रद्धालुओं की भीड़ वहाँ इकट्ठा होने लगी।

अंत में, नगरों के निर्माण में कुछ सुल्तानों ने भी रूचि दिखायी। उदाहरण के लिए, अलाउद्दीन खिलजी ने पूर्वी राजस्थान में 'झाइन' नामक नगर स्थापित किया। यह आगे 'शहर–ए–नौ' के नाम से जाना गया। उसी प्रकार, फिरोजशाह तुगलक ने जौनपुर, फिरोजपुर, हिसार–फिरोजा, फिरोजाबाद और फतेहाबाद अनेक नगरों की स्थापना की। इस तरह सल्तनत के अधीन नगरीकरण का विस्तार देखा गया।

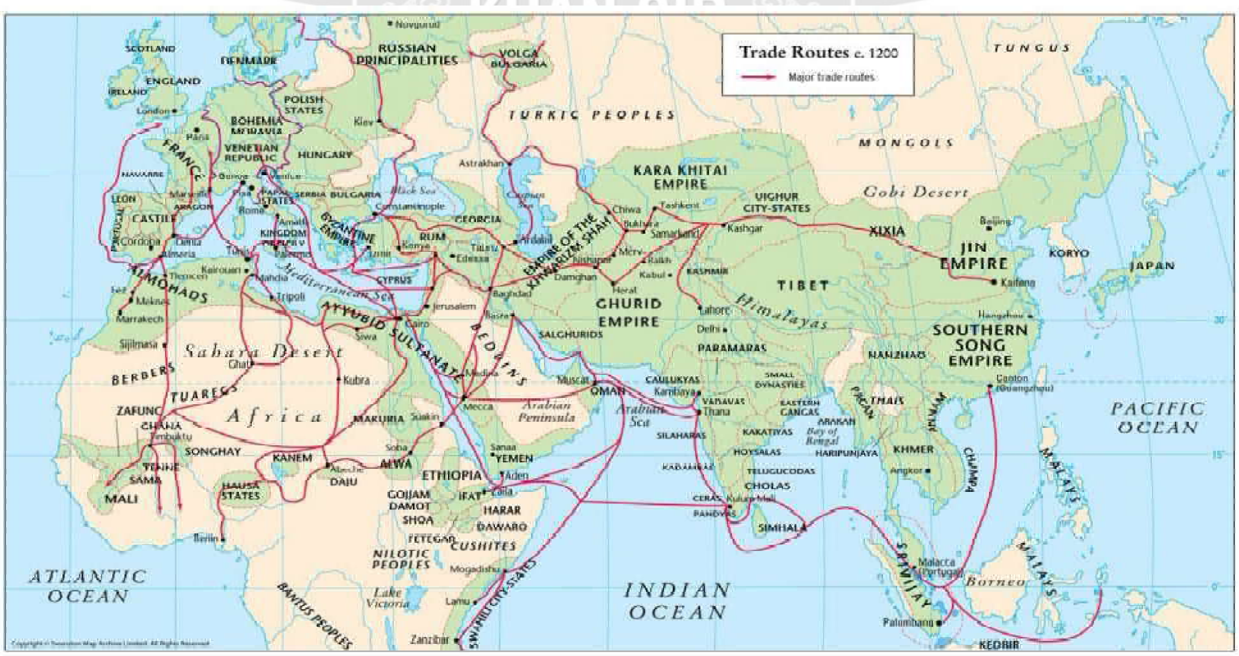

**मुगलकालीन अर्थव्यवस्था**

**कृषि**
- बंजर भूमि का विकास।
- किसानों को तकावी ऋण अथवा सोन्धर दिया जाता था। (मुहम्मद-बिन-तुगलक)
- सिंचाई - लीवर प्रणाली का प्रयोग
- फसलों के प्रकार -
  1. तंबाकू एवं मक्का (17वीं सदी)
  2. आलू, लाल मिर्च, काजू, (18वीं सदी) पपीता, अनानास

**शिल्प एवं तकनीकी**
- अकबर - मेचलॉक की जगह फिंटलॉक तकनीकी का प्रयोग

**व्यापार**
- काबुल एवं कांधार पर नियंत्रण।
- मानक मुद्रा - रूपया एवं दाम (शेरशाह)
- विश्व स्तर का इन्फ्रास्ट्रक्चर
- बेहतर कानून व्यवस्था
- जहाँगीर के द्वारा व्यापार की सुरक्षा पर बल।
- यूरोपीय कंपनियों की भूमिका।

**नगरीकरण**

## कृषि अर्थव्यवस्था

मुगल काल में भारत विश्व के सबसे आबाद क्षेत्रों में से एक था। भारत के भौगोलिक आकार के कारण यहाँ मिट्टी में विविधताएं थीं तथा पर्यावरणीय स्थिति में भी विभिन्न क्षेत्रों के बीच अंतर था। यूरोप की तुलना में भारत की मिट्टी उपजाऊ थी। जहाँ यूरोप में एक फसल बोयी जाती थी, वहीं भारत में दो फसलें बोयी जाती थीं तथा फिर कहीं-कहीं दो फसलों के बीच की अवधि में एक तीसरी फसल भी बोयी जाती थी।

कृषि, अर्थव्यवस्था का आधार थी। अतः राजकीय आमदनी में वृद्धि के लिए कृषि का विकास आवश्यक था। उस काल में जनसंख्या कम थी तथा कृष्य भूमि की व्यापक उपलब्धता थी, इसलिए राज्य का बल होता था कि किसान भूमि से बँधे रहे। औरंगजेब के काल के एक फरमान से, जो रसिकदास के नाम से जारी किया गया, यह ज्ञात होता है कि राज्य की यह चिंता थी कि जिस भूमि को किसान खाली कर गए हैं, नए किसानों की सहायता से उसे आबाद किया जाए। राज्य की ओर से अमालगुजारों को यह निर्देश होता था कि वे किसानों को सहायता प्रदान करें तथा फिर राज्य की ओर से किसानों के लिए कृषि ऋण की भी सुविधा थी। राज्य के द्वारा सिंचाई को भी प्रोत्साहन दिया जाता था। इस काल में सिंचाई के साधन के रूप में कुएँ, तालाब, जलाशय के साथ-साथ नहरों के विकास पर भी बल दिया जाता था। कुएँ से पानी निकालने के लिए ढेकुल, चरस तथा साकिया का प्रयोग किया जाता था। इस काल में जागीरदार तथा 'मदद्-ए-माश' प्राप्तकर्त्ता से भी यह अपेक्षा जाती थी कि वे कृषि के विकास में सक्रिय योगदान दें। मुगलकालीन साहित्य में विभिन्न प्रकार की फसलों का जिक्र मिलता है। अबुल फजल की आइन-ए-अकबरी में रबी (19-21) और खरीफ (17-21) फसलों की एक लंबी सूची दी गयी है। इस काल में नगरीय जनसंख्या की आवश्यकता खाद्यान्नों के उत्पादन के माध्यम से पूरी की गयी। इस काल में नकदी फसलों में गन्ना, कपास, नील और अफीम प्रमुख थे। इन्हे 'जिंस-ए-कामिल' कहा जाता था। फिर 17वीं सदी में नकदी फसल के रूप में तम्बाकू और मक्का जुड़ गए। ये फसलें नई दुनिया से आई थीं। 17वीं सदी के उत्तराद्ध में कॉफी की खेती भी आरंभ हो गई और 18वीं सदी में आलू, लाल मिर्च तथा टमाटर की खेती प्रारंभ हुई। इस काल में फलों की नई-नई किस्म विकसित हुई क्योंकि कलम लगाने की पद्धति का विकास हुआ। मुगलों के अधीन राजाओं और राजकुमारों के निजी बगीचे होते थे। उनसे उन्हें आर्थिक लाभ प्राप्त होता था। नकदी फसलों की खेती के कारण कृषि अर्थव्यवस्था का मौद्रीकरण हुआ।

## शिल्प एवं तकनीकी

मुगल काल में उन्नत वाणिज्य-व्यापार ने शिल्प उत्पादन को प्रोत्साहन दिया। शिल्प उत्पादन की खपत मुख्यतः घरेलू बाजार में होती थी, किन्तु 17वीं सदी में भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों को एक बड़ा विदेशी बाजार भी प्राप्त हुआ। इसका कारण था यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों की भूमिका। इन्होंने व्यापार में एक प्रकार की क्रांति ला दी। पुर्तगीज कंपनी मुख्यतः मसाला व्यापार से ही संबद्ध रही थी, किन्तु ब्रिटिश एवं डच कंपनियों ने भारत में वस्त्र उद्योग को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया। इस काल में सूती वस्त्र उद्योग को व्यापक प्रोत्साहन मिला क्योंकि उसे पश्चिम में एक बड़ा बाजार प्राप्त हुआ। उत्तर भारत में गुजरात एवं बंगाल सूती वस्त्र के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। दक्षिण भारत में देवगिरी एवं वारंगल भी सूती वस्त्र उत्पादन के लिए जाने जाते थे। इस काल में सूती वस्त्र उत्पादों की विविधता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि हमीदा नकवी ने पाँच ऐसे सूती वस्त्र उत्पादन केन्द्रों का जिक्र किया है जहाँ 49 प्रकार के कपड़े बनते थे। कपड़ों की छपाई एवं रंगाई भी

महत्वपूर्ण शिल्प थी। फिर इस काल में रेशमी एवं ऊनी वस्त्रों का भी अत्यधिक उत्पादन हुआ। कश्मीर को रेशम उत्पादन का केन्द्र माना जाता था। इसके अतिरिक्त बनारस भी रेशमी वस्त्र उत्पादन का एक केन्द्र था। किन्तु इसका सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र बंगाल था। यहाँ 15वीं सदी से ही मलबरी रेशम का उत्पादन होने लगा था।

मुगलकाल में एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि थी – कालीन बुनाई तकनीकी का विकास। अकबर के काल में ईरानी मॉडल पर कालीन बुनाई को प्रोत्साहन मिला तथा उत्तर भारत में लाहौर, आगरा और फतेहपुर सीकरी उसके महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उभरे। इसके अतिरिक्त दिल्ली, मिर्जापुर, वारंगल और मसूलीपट्टम् में भी कालीनों की बुनाई होने लगी।

इसके अतिरिक्त, बाबर के आगमन के साथ ही भारत में तोड़ेदार बन्दूकों का प्रयोग प्रारम्भ हो गया था। फिर यूरोपीयों के संपर्क में मुगल तकनीकीविद् भी 'व्हील लॉक' तथा 'फ्लिंट लॉक' जैसी विधि से परिचित हो सके, यद्यपि उनका सीमित प्रयोग ही हुआ होगा। उसी प्रकार, अकबर ने एक ऐसी बैलगाड़ी का निर्माण किया, जो सामान ढोने के साथ-साथ अनाज पीसने का काम भी करती थी। उसी तरह, उसे एक ऐसी बंदूक निर्मित करने का भी श्रेय दिया जाता है, जो एक साथ 17 गोलियाँ दागती थी। उसी तरह यूरोपीय प्रभाव में जहाज निर्माण में कीलों का प्रयोग होने लगा तथा लौह लंगर का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। भारतीय भी यूरोपियों की तरह जहाजों से पानी निकालने के लिए चेन पंप का प्रयोग करने लगे। इस प्रकार हम देखते हैं कि मुगल काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास अवरुद्ध नहीं हुआ था। फिर भी यूरोप की तरह इसका व्यापक विस्तार नहीं हो सका, वरन् विज्ञान निजी स्तर पर ही फलता-फूलता रहा।

## वाणिज्य-व्यापार

मुगल शासन ने भारत में कुछ ऐसे कारकों को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप आंतरिक एवं बाह्य व्यापार दोनों को प्रोत्साहन मिला। आंतरिक व्यापार को निम्नलिखित कारकों ने प्रेरित किया-

प्रथम, मुगलों के अधीन एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना हुई। इस मुगल साम्राज्य का महत्वपूर्ण बंदरगाहों पर भी नियंत्रण रहा। फिर इस काल में कानून-व्यवस्था की स्थिति भी सुदृढ़ हुई। इस काल में राज्य के द्वारा नकद में भू-राजस्व की वसूली पर विशेष बल दिया गया। इस प्रकार अर्थव्यवस्था के मौद्रीकरण को विशेष प्रोत्साहन मिला। शेरशाह के द्वारा ही मानक मुद्रा के रूप में रुपया और दाम को स्थापित कर दिया गया था। मानकीकृत मुद्रा ने भी वाणिज्य-व्यापार को अपने ढंग से प्रोत्साहित किया।

परंपरागत रूप में ऐसा माना जाता था कि मुगल मध्य एशिया से आए थे, इसलिए वे व्यापार के प्रति उदासीन थे। परंतु हाल के अनुसंधान में यह स्थापित होता है कि मध्य एशियाई राज्य घास से भरे वृक्षहीन विस्तृत मैदान (स्टेपी) में पड़ते थे, जिसमें कृष्य भूमि का अभाव था, इसलिए उनसे होकर पूरब से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण जाने वाली सड़कों के उस जाल के महत्व के प्रति वे और भी जागरूक थे, जिन पर व्यापारिक वस्तुओं का आवागमन होता था। यही वजह है कि मुगल शासकों ने वाणिज्य-व्यापार के विकास में व्यक्तिगत रूचि दिखायी। उदाहरण के लिए, जहाँगीर के द्वारा व्यापारियों को अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान की गई। फिर यातायात तथा संचार व्यवस्था के विकास ने भी व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया। आंतरिक व्यापार को सड़कों का एक जाल सुगम बनाता था। शेरशाह के पश्चात् लगभग सभी महत्वपूर्ण शासकों ने यातायात सुविधाओं को बढ़ाने का प्रयत्न किया। भारत में परिवहन का प्रबंधन उस काल के यूरोप की तुलना में बेहतर था। मुख्य सड़कों पर आठ-आठ या दस-दस मीलों की दूरी पर सराय बने हुए थे।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त एक ऐसी वित्त व्यवस्था के विकास से भी माल के संचालन में सुविधा हुई, जिसके अधीन धन को एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से पहुँचाया जा सकता था। यह काम हुण्डियों के द्वारा किया जाता था। हुंडी एक साख पत्र थी, जिसका भुगतान एक खास अवधि के बाद बट्टा काटकर किया जाता था। हुंडी में प्रायः बीमे का भी समावेश होता था, जो माल की कीमत, गंतव्य, परिवहन की किस्म आदि के अनुसार अलग-अलग होती थी।

16वीं सदी तथा 18वीं सदी के बीच का काल विदेश व्यापार के विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण काल है। इस काल में कतिपय कारकों ने विदेश व्यापार को भी प्रोत्साहन दिया-

मुगलों के अंतर्गत काबुल तथा कंधार भारतीय साम्राज्य के अंग बन गए थे। ये दोनों क्षेत्र क्रमशः पश्चिम एशिया तथा मध्य एशिया के महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों पर स्थित थे। इस काल में स्वयं शाही घराना तथा कुछ महत्वपूर्ण कुलीनों के द्वारा वाणिज्य-व्यापार के विकास में विशेष रूचि ली गई। प्रमुख अमीरों के भी अपने जहाज होते थे, जो लाल सागर के बंदरगाहों और दक्षिण-पूर्व एशिया की नियमित यात्रा करते थे। उदाहरण के लिए, जहाँगीर, नूरजहाँ तथा शाहजादा खुर्रम के पास अपने जहाज थे, जो सूरत और लाल सागर के बंदरगाहों के बीच चलते थे। व्यापार के विकास का एक कारण इस काल में तीन

शक्तिशाली एशियाई राज्यों–तुर्की, सफ़वी और मुगल राज्यों का उदय था। चीन के मिंग साम्राज्य की भूमिका की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इन साम्राज्यों ने न केवल कानून और व्यवस्था स्थापित करके वाणिज्य–व्यापार तथा वस्तु निर्माण के अनुकूल अवस्था उत्पन्न की, बल्कि शहरीकरण तथा अपनी–अपनी अर्थव्यवस्था के मौद्रीकरण में भी सहायता दी। उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त यूरोपीय कंपनियों के आगमन ने विदेश व्यापार को गति प्रदान की।

**नगरीकरण**

मुगल साम्राज्य की स्थापना ने आर्थिक क्षेत्र में कई सकारात्मक परिवर्तनों को जन्म दिया। इन परिवर्तनों में एक है–नगरीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन। 'तृतीय नगरीकरण' की यह प्रक्रिया, जो 10वीं सदी में आरंभ हुई, मुगल काल में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गयी। यह वह काल है जब बड़ी संख्या में गाँव का विकास कस्बों के रूप में हुआ और कुछ कस्बे नगर के रूप में विकसित हो गए। इस काल का एक महत्वपूर्ण फारसी लेखक निजामुद्दीन अहमद 120 बड़े शहरों तथा 3200 कस्बों का जिक्र करता है। नगरीकरण की प्रक्रिया के प्रोत्साहन के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे–

1. अर्थव्यवस्था का मौद्रीकरण हो रहा था क्योंकि भू–राजस्व के नकद संग्रह पर बल दिया जा रहा था। अतः गाँव के नजदीक अनाजों की मण्डी का विकास होने लगा और फिर ये मण्डियाँ कस्बे के रूप में विकसित हो गईं।
2. मुगल शासकों के द्वारा बड़ी संख्या में 'मदद्–ए–माश' भूमि प्रदान की गई। ये क्षेत्र भी मुस्लिम जनसंख्या पर आधारित कस्बे तथा नगर के रूप में विकसित हो गए।
3. साम्राज्य की राजधानी तथा प्रांतीय राजधानियों का विकास भी नगर के रूप में हुआ। उदाहरण के लिए, दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, लखनौती आदि।
4. कुछ क्षेत्रीय शासकों की राजधानियाँ भी नगर के रूप में विकसित हो गईं। उदाहरण के लिए, दौलताबाद, हैदराबाद, बुरहानपुर आदि।
5. कुछ ऐसे भी नगर थे जो उत्पादन से भी जुड़े थे, किंतु नगर के रूप में उनके विकास में धार्मिक कारक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जैसे–मथुरा, बनारस आदि।
6. कुछ नगरों का विकास विशिष्ट उत्पादन के कारण भी हुआ था। जैसे–बयाना, नील उत्पादन के कारण, खैराबाद, सूती वस्त्र के कारण।
7. कुछ नगरों का विकास व्यक्तिगत प्रयासों का भी परिणाम हो सकता है। जैसे–शाहजहाँ के दो अमीरों ने शाहजहाँपुर नामक नगर बसाया।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR